http://www.maanavta.com/short-motivational-hindi-stories/#

## नम्रता का पाठ

एक बार अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज वॉशिंगटन नगर की स्थिति का जायजा लेने के लिए निकले। रास्ते में एक जगह भवन का निर्माण कार्य चल रहा था। वह कुछ देर के लिए वहीं रुक गए और वहां चल रहे कार्य को गौर से देखने लगे। कुछ देर में उन्होंने देखा कि कई मजदूर एक बड़ा-सा पत्थर उठा कर इमारत पर ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। किंतु पत्थर बहुत ही भारी था, इसलिए वह इतने मजदूरों के उठाने पर भी उठ नहीं आ रहा था। ठेकेदार उन मजदूरों को पत्थर न उठा पाने के कारण डांट रहा था पर खुद किसी भी तरह उन्हें मदद देने को तैयार नहीं था। वॉशिंगटन यह देखकर उस ठेकेदार के पास आकर बोले, 'इन मजदूरों की मदद करो। यदि एक आदमी और प्रयास करे तो यह पत्थर आसानी से उठ जाएगा।' ठेकेदार वॉशिंगटन को पहचान नहीं पाया और रौब से बोला, 'मैं दूसरों से काम लेता हूं, मैं मजदूरी नहीं करता।' यह जवाब सुनकर वॉशिंगटन घोड़े से उतरे और पत्थर उठाने में मजदूरों की मदद करने लगे। उनके सहारा देते ही पत्थर उठ गया और आसानी से ऊपर चला गया। इसके बाद वह वापस अपने घोड़े पर आकर बैठ गए और बोले, 'सलाम ठेकेदार साहब, भविष्य में कभी तुम्हें एक व्यक्ति की कमी मालूम पड़े तो राष्ट्रपति भवन में आकर जॉर्ज वॉशिंगटन को याद कर लेना।' यह सुनते ही ठेकेदार उनके पैरों पर गिर पड़ा और अपने दुर्व्यवहार के लिए क्षमा मांगने लगा। ठेकेदार के माफी मांगने पर वॉशिंगटन बोले, 'मेहनत करने से कोई छोटा नहीं हो जाता। मजदूरों की मदद करने से तुम उनका सम्मान हासिल करोगे। याद रखो, मदद के लिए सदैव तैयार रहने वाले को ही समाज में प्रतिष्ठा हासिल होती है। इसलिए जीवन में ऊंचाइयां हासिल करने के लिए व्यवहार में नम्रता का होना बेहद जरूरी है।' उस दिन से ठेकेदार का व्यवहार बिल्कुल बदल गया और वह सभी के साथ अत्यंत नम्रता से पेश आने लगा।

## मन का बोझ

एक बार एक गुरू ने अपने सभी शिष्यों से अनुरोध किया कि वे कल प्रवचन में आते समय अपने साथ एक थैली में बड़े-बड़े आलू साथ लेकर आएं। उन आलुओं पर उस व्यक्ति का नाम लिखा होना चाहिए, जिससे वे नफरत करते हैं। जो शिष्य जितने व्यक्तियों से घृणा करता है, वह उतने आलू लेकर आए। अगले दिन सभी शिष्य आलू लेकर आए। किसी के पास चार आलू थे, तो किसी के पास छह। गुरू ने कहा कि अगले सात दिनों तक ये आलू वे अपने साथ रखें। जहां भी जाएं, खाते-पीते, सोते-जागते, ये आलू सदैव साथ रहने चाहिए। शिष्यों को कुछ समझ में नहीं आया, लेकिन वे क्या करते, गुरू का आदेश था। दो-चार दिन बाद ही शिष्य आलुओं की बदबू से परेशान हो गए।

जैसे-तैसे उन्होंने सात दिन बिताए और गुरू के पास पहुंचे। सबने बताया कि वे उन सड़े आलुओं से परेशान हो गए हैं। गुरू ने कहा- "यह सब मैंने आपको शिक्षा देने के लिए किया था। जब सात दिन में आपको ये आलू बोझ लगने लगे, तब सोचिए कि आप जिन व्यक्तियों से नफरत करते हैं, उनका कितना बोझ आपके मन पर रहता होगा। यह नफरत आपके मन पर अनावश्यक बोझ डालती है, जिसके कारण आपके मन में भी बदबू भर जाती है, ठीक इन आलुओं की तरह। इसलिए अपने मन से गलत भावनाओं को निकाल दो। यदि किसी से प्यार नहीं कर सकते, तो कम से कम नफरत तो मत करो। इससे आपका मन स्वच्छ और हल्का रहेगा। सभी शिष्यों ने वैसा ही किया।

## संत की पहचान

महर्षि रमण अपनी छोटी सी कुटिया में अत्यंत सादगी से रहते थे। न उन्होंने किसी वस्तु का संग्रह किया था और न ही उन्हें किसी वस्तु की आवश्यकता महसूस होती थी। उनके शिष्य और भक्त उनसे प्राप्त ज्ञान के बदले कई बार कोई उपहार अपने मन से देना चाहते तो महर्षि इनकार कर देते थे। अगर कभी कुछ आ भी गया, तो वे उसे जरूरतमंदों में वितरित कर देते थे। निर्धनों व अशक्तों की सहायता करने के लिए वे सदैव तत्पर रहते थे और अपने शिष्यों को भी

इसकी प्रेरणा दिया करते थे। महर्षि रमण अपने शरीर पर मात्र एक धोती धारण करते थे। इस एक धोती के अतिरिक्त कोई सांसारिक वस्तु उनके पास नहीं थी। एक दिन महर्षि की धोती फट गई। उन्हें लगा कि अभी धोती को सिलकर कुछ समय इसी से काम चलाया जा सकता है। उन्होंने कुटिया में सुई खोजी, किंतु उनके जैसे संत के यहां सुई कैसे मिलती?

उन्होंने बबूल के कांटे से ही धोती की सिलाई शुरू कर दी। तभी उनका एक भक्त उनके पास आया और बोला-"महर्षि, इसे फेंक दीजिए। मैं आपके लिए नई धोती ला देता हूं।" महर्षि ने बड़ी गंभीरता से कहा- "देखो, सामने खड़ा बच्चा ठंड से ठिठुर रहा है, तुम उसके लिए कपड़ों की व्यवस्था कर दो। समझ लेना कि मैंने तुम्हारी धोती ले ली। मेरी यह धोती तो अभी दो माह और चल जाएगी। सच्चा संत वही है, जो अपना सब कुछ दूसरों को देने के लिए सदैव तत्पर रहे।" महर्षि की बात सुनकर भक्त उनके समक्ष नतमस्तक हो गया।

## नौकरी की मजबूरी

एक दिन अकबर और बीरबल महल के बागों में सैर कर रहे थे। फले-फूले बाग को देखकर अकबर बहुत खुश थे। वे बीरबल से बोले, "बीरबल, देखो यहां बैंगन, कितने सुंदर लग रहे हैं! इनकी सब्जी कितनी स्वादिष्ट लगती है! बीरबल, मुझे बैंगन बहुत पसंद हैं।" बीरबल ने कहा, "हां, महाराज, आप सत्य कहते हैं। यह बैंगन है ही ऐसा। यह ना केवल देखने में अच्छा लगता है, बल्कि खाने में भी इसका कोई मुकाबला नहीं है। और देखिए भगवान ने भी इसीलिए इसके सिर पर ताज बनाया है।" अकबर यह सुनकर बहुत खुश हुआ।

कुछ हफ्तों बाद अकबर और बीरबल उसी बाग में घूम रहे थे। अकबर को कुछ याद आया और मुस्कुराते हुए बोले, "बीरबल देखो यह बैंगन कितना भद्दा और बदसूरत है और यह खाने में भी बहुत बेस्वाद है।" बीरबल ने कहा, "हां हुजूर, आप सही कह रहे हैं। इसीलिए इसका नाम बैंगन यानी बे-गुण है। " यह सुनकर अकबर को गुस्सा आ गया। उन्होंने झल्लाते हुए कहा, "क्या मतलब है बीरबल? मैं जो भी बात कहता हूं, तुम उसे ही ठीक बताते हो।

बैंगन के बारे में तुम्हारी दोनों ही बातें सच कैसे हो सकती हैं, क्या तुम मुझे समझाओगे?" बीरबल ने हाथ जोड़ते हुए कहा, "हुजूर, मैं आपका नौकर हूं। बैंगन का नहीं।" अकबर यह जवाब सुनकर बहुत खुश हुए और बीरबल की तरफ पीठ करके मुस्कुराने लगे। ऐसे मालिक बिरले ही होते हैं, जो अपने मत के खिलाफ सुनना पसंद करते हैं। इसलिए उनकी हां में हां मिलाने वाले सुखी रहते हैं।

## कर्तव्य का पाठ

तपस्वी जाजलि श्रद्धापूर्वक वानप्रस्थ धर्म का पालन करने के बाद खड़े होकर कठोर तपस्या करने लगे। उन्हें गतिहीन देखकर पक्षियों ने उन्हें कोई वृक्ष समझ लिया और उनकी जटाओं में घोंसले बनाकर अंडे दे दिए। अंडे बढ़े और फूटे, उनसे बच्चे निकले। बच्चे बड़े हुए और उड़ने भी लगे। एक बार जब बच्चे उड़कर पूरे एक महीने तक अपने घोंसले में नहीं लौटे, तब जाजलि हिले। वह स्वयं अपनी तपस्या पर आश्चर्य करने लगे और अपने को सिद्ध समझने लगे। उसी समय आकाशवाणी हुई, 'जाजलि, गर्व मत करो। काशी में रहने वाले व्यापारी तुलाधार के समान तुम धार्मिक नहीं हो।' आकाशवाणी सुनकर जाजलि को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह उसी समय काशी चल पड़े। उन्होंने देखा कि तुलाधार तो एक अत्यंत साधारण दुकानदार हैं। वह अपनी दुकान पर बैठकर ग्राहकों को तौल-तौलकर सौदा दे रहे थे। जाजलि को तब और भी आश्चर्य हुआ जब तुलाधार ने उन्हें उठकर प्रणाम किया, उनकी तपस्या, उनके गर्व तथा आकाशवाणी की बात भी बता दी। जाजलि ने पूछा, 'तुम्हें यह सब कैसे मालूम?' तुलाधार ने विनम्रतापूर्वक कहा, 'सब प्रभु की कृपा है। मैं अपने कर्त्तव्य का सावधानी से पालन करता हूं। न मद्य बेचता हूं, न और कोई निंदित पदार्थ। अपने ग्राहकों को मैं तौल में कभी ठगता नहीं। ग्राहक बूढ़ा हो या बच्चा, वह भाव जानता हो या न जानता हो, मैं उसे उचित मूल्य पर उचित वस्तु ही देता हूं। किसी पदार्थ में दूसरा कोई दूषित पदार्थ नहीं मिलाता। ग्राहक की कठिनाई का लाभ उठाकर मैं अनुचित लाभ भी उससे नहीं लेता हूं। ग्राहक की सेवा करना मेरा कर्त्तव्य है, यह बात मैं सदा स्मरण रखता हूं। मैं राग-द्वेष और लोभ से दूर रहता हूं। यथाशक्ति दान

करता हूं और अतिथियों की सेवा करता हूं। हिंसारहित कर्म ही मुझे प्रिय है। कामना का त्याग करके संतोषपूर्वक जीता हूं।' जाजलि समझ गए कि आखिर क्यों उन्हें तुलाधार के पास भेजा गया। उन्होंने तुलाधार की बातों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प किया।